Seventeenth Loksabha

an>

Title: Regarding replacing India as Bharat in all documents.

श्री मितेष पटेल (बकाभाई) (आनंद): माननीय सभापति महोदय, किसी राष्ट्र के नाम से सामान्यत: उस देश की सभ्यता-संस्कृति, प्रभाव, गुण आदि झलकते हैं । उस नाम से, उसे राष्ट्र की संस्कृति या तासीर का सहज अंदाजा हो जाता है । हमारा राष्ट्र भात भी, भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त, हिन्द, इंडिया एवं अन्य नामों से जाना जाता है । भारत का नाम 'इंडिया' ईस्ट इंडिया कम्पनी अर्थात् अंग्रेजों के शासनकाल से पुकारा जाने लगा । इस नाम को हमारे देश की सिन्धु नदी, इंडस की सभ्यता से जोड़ते हुए सही ठहराने की कोशिश होती है । लेकिन कहीं न कहीं इस नाम से गुलामी की बू आती है । अन्त्योदय के लिए समर्पित माननीय प्रधान सेवक श्रीमान नरेन्द्रभाई मोदी जी ने गुलामी के सारे प्रतीकों को खत्म करने का लाल किले से आह्वान किया था । उन्होंने गुलामी के कई प्रतीक चिह्नों को पीछे भी छोड़ा है । इंडिया के स्थान पर हर डॉक्युमेंट में हर भाषा में भारत या भारतवर्ष का उपयोग होने से गुलामी के एक और प्रतीक से यह देश मुक्त हो जाएगा । इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने भी सरकार के पाले में गेंद को डाल दिया है ।

इसलिए मैं सदन के माध्यम से, सरकार से इसके लिए मांग करता हूँ ।